ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-8* September- 202
Innovation The Research Concept

वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में जनसंख्या शिक्षा की प्रासंगिकता

Relevance of Population Education in Present Indian Perspective

Paper Submission: 10/09/2021, Date of Acceptance: 24/09/2021, Date of Publication: 25/09/2021

संतोष कुमार सुमन
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
तिलकामांझी भागलपुर
विश्वविद्यालय, भागलपुर,
बिहार, भारत

सारांश

जनसंख्या की असाधारण वृद्धि ने विश्व के समक्ष एक भीषण समस्या उत्पन्न कर दी है। यह समस्या व्यक्ति, समाज एवं सम्पूर्ण विश्व पर दुष्प्रभाव डालती है। यह मानव के सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि, राष्ट्र की प्रगति, वैश्विक शांति एवं सुरक्षा को बुरी तरह प्रभावित करती है। भारत एक विकासशील देश है जो जनसंख्या की दृष्टि से द्वितीय वृहत् राष्ट्र है। जनसंख्या की ज्यामितीय दर से बढ़ती अप्रत्याशित दर राष्ट्र के समक्ष एक गम्भीर चुनौती है। जनसंख्या पर नियंत्रण एवं नियोजन राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक है। जनसंख्या- शिक्षा एक व्यावहारिक शिक्षा है, जिसका उद्देश्य लघु परिवार के मूल्यों का प्रसार शिक्षा के माध्यम से जनजीवन में करना है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रासंगिकता इस दिशा में अत्यन्त ही समीचीन है।

The extraordinary growth of population has posed a serious problem before the world. This problem affects the individual, society and the whole world. It badly affects human happiness, health, prosperity, progress of the nation, global peace and security. India is a developing country which is the second largest nation in terms of population. The unprecedented rate of increase in the geometric rate of population is a serious challenge before the nation. Population control and planning are essential for national development. Population-education is a practical education, whose aims is to spread the values of small family in public life through education. The relevance of the present study in this direction is very important.

मुख्य शब्दः अप्रत्याशित, ज्यामितीय, प्रासंगिक, समीचीन, वैश्विक
Unprecedented, Geometric, Relevant, Expedient, Global.

प्रस्तावना

वर्तमान भारत जनसंख्या की भीषण-समस्या के दौर से गुजर रहा है। 21 वीं सदी के वर्तमान परिदृश्य में जनसंख्या-वृद्धि एक भयावह स्थिति उत्पन्न करता है। अगर जनसंख्या वृद्धि की यही रफ्तार रही तो सारी विकास योजनाएँ कोरी बनकर रह जाएँगी।भारत की आबादी चीन के बाद दूसरी है, किन्तु भावी दशकों में यह विश्व का सबसे बड़ा जनसंख्या वाला देश होने की संभावना रखता है। इसकी अभी कुल आबादी 135 करोड़ से भी अधिक है। जनसंख्या नियंत्रण के सारे उपाय कारगर सिद्ध न हो पा रहें हैं। हमारा भारत एक युवा देश है जहाँ बच्चों एवं युवाओं की संख्या दो-तिहाई है। अतः अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को जनसंख्या वृद्धि से व्यक्तिगत जीवन, परिवार, समुदाय, समाज, राष्ट्र तथा विश्व पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों से अवगत कराते हुए जनसंख्या वृद्धि के प्रति जागरूकता और सही दृष्टिकोण विकसित कर वैचारिक क्रांति द्वारा शैक्षिक व्यवस्था में समावेश ही जनसंख्या शिक्षा है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के कतिपय उद्देश्य निम्नलिखित हैः-

1. विश्व जनसंख्या के संदर्भ में देश की जनसंख्या वृद्धि दर, जनसांख्किीय रूपरेखा सहित जनसंख्या गतिविधि का बुनियादी ज्ञान छात्रों को प्रदान करना।

2. छात्रों को इस तथ्य से परिचित कराना कि परिवार के हित के लिए परिवार का आकार आसानी से नियोजित हो सकता है।
3. आर्थिक विकास तथा उच्च स्तर का स्वास्थ्य, शिक्षा, घर, भोजन तथा जीवन की अन्य सुविधाओं के साथ व भावी जीवन स्तर की प्राप्ति के लिए जनसंख्या सम्बन्धी वर्तमान विशेषताओं के महत्व को मूल्यांकित करने की योग्यता प्रदान करना।
4. छात्रों को परिवार के प्रत्येक सदस्य के स्वास्थ्य के खतरे का ज्ञान कराना।
5. राष्ट्रहित के लिए सरकारी परिवार नियोजन का ज्ञान कराना।
6. छात्रों को जनसंख्या वृद्धि से होने वाले दुष्परिणामों का बोध कराना।

अवधारणा

यूनेस्को के अनुसार- छात्रों में जनसंख्या के प्रति उचित दृष्टिकोण, उत्तररदायित्व, अभिवृति तथा व्यवहारों का विकास करने की दृष्टि से ऐसे कार्यक्रमों का संगठन एवं संचालन जनसंख्या शिक्षा है जो परिवार, समुदाय, राष्ट्र तथा विश्व की जनसंख्या की स्थिति का ज्ञान कराते हुए उत्तदायित्यो अभिवृतियो का विकास करे। जनसंख्या शिक्षा परिवार, समुदाय, राष्ट्र तथा विश्व की जनसंख्या में होनेवाले परिवर्तनो, परिणाम तथा उनके सुधार हेतु गहन, सार्वभौमिक तथा क्रियात्मक शिक्षा एवं शैक्षिक कार्यक्रम का ज्ञान कराता है। जनसंख्या वृद्धि से होनेवाले संभावित दुष्प्रभावों के ज्ञान के प्रति चेतना पैदा करने वाली शिक्षा ही जनसंख्या शिक्षा कहलाती है।

प्रो॰ वी॰के॰आर॰वी॰ राव के मतानुसार- जनसंख्या शिक्षा का प्रयोजन केवल जनसंख्या नियंत्रण नहीं, वरन् जनसंख्या में गुणात्मक बेहतरी लाना है। इस प्रकार का कार्यक्रम मानवीय स्रोतों के विकास का कार्यक्रम है। यह अपेक्षित मूल्यों की अभिवृत्ति के विकास पर बल देता है ताकि संख्या व गुणात्मकता दोनों को ध्यान में रखा जा सके।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रतिवेदन के अनुसार- जनसंख्या शिक्षा छात्र समुदाय में जनसंख्या वृद्धि की नीति, कार्यक्रमों तथा लघु परिवार की अवधारणा को समझने का साधन है, जिससे जन समुदाय पर पड़ रहे अथवा पड़नेवाले विपरीत प्रभाव की जानकारी दी जा सके।

पूर्वसाहित्य की समीक्षा

जनसंख्या अध्ययन से सम्बन्धित आयामों पर समाज विज्ञान के विभिन्न विषयों पर समाजशास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र, जनांकिकी आदि में कई उल्लेखनीय कार्य हुए हैं।भूगोल में चंडीगढ़ वि॰वि॰, बी॰एच॰यू॰ वाराणसी तथा अन्य विश्वविद्यालयों के विद्वानों ने जनसंख्या भूगोल पर कार्य किया है जिसके द्वारा प्रकाशित पुस्तकें एवं आलेख प्रस्तुत अध्ययन की प्रमुख आधार सामग्री का निर्माण करते हैं। आर॰एस॰ त्रिपाठी (1991) की पुस्तक जनांकिकी और जनसंख्या अध्ययन इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। पुष्पा, इवे (1984) द्वारा लिखित जनसंख्या शिक्षा, हरिहर सिंह एवं समरजीत यादव (1986) की पुस्तक जनसंख्या शिक्षा के मूल तत्व, वी॰पी॰पंडा की पुस्तक जनसंख्या भूगोल में इस विषय पर प्रचुर सामग्री उपलब्ध है। एन॰सी॰आर॰टी॰ द्वारा जनसंख्या शिक्षा पर कई कार्यशालाएँ आयोजित की गई हैं जो इसकी महत्ता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

जनसंख्या शिक्षा : आवश्यकता एवं महत्व

कोई भी विवेकी व्यक्ति आधुनिक संदर्भ में जनसंख्या शिक्षा के महत्व एवं आवश्यकता की उपेक्षा नहीं कर सकता। आज जनसंख्या शिक्षा द्वारा इस बात पर बल दिया जा रहा है कि तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न दुष्परिणामों से छात्र समुदाय अवगत हों, उनके कारणों की खोज करें तथा समाधान के प्रयासों पर चिन्तन कर एक जनआन्दोलन खड़ा करे तथा संघर्ष में सहभागी बने। जनसंख्या शिक्षा सचमुच एक महत्वपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा युवा छात्र एवं छात्राएँ अपनी उन्नति के लिए संकल्प लेने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। जनसंख्या शिक्षा प्रत्येक मनुष्य को भोजन, आवास, स्वास्थ्य, रोजगार, शिक्षा प्राप्ति के अवसर तथा उच्च जीवन स्तर की समस्याओं का हल प्रस्तुत करती है। वास्तव में जनसंख्या शिक्षा एक वैज्ञानिक माध्यम है जिसके द्वारा परिवार नियोजन को पारिवारिक जीवन में सहजतापूर्वक लाया जा सकता है तथा आबादी

की बाढ़ पर बांध खड़ा कर **उसे जनकल्याणकारी बनाया जा सकता है। इसका महत्व निम्न तथ्यों से परिलक्षित है-**

1. छोटा परिवार सदैव सुखी होता है। यह बात जनसंख्या शिक्षा द्वारा अगर छात्रों के मस्तिष्क में घर कर जाय तो परिवार नियोजन स्वतः चरितार्थ होगा।
2. जनसंख्या शिक्षा राष्ट्रीय विकास के साथ सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। इसीलिए इसकी अत्यधिक आवश्यकता है।
3. इस शिक्षा द्वारा छात्रों में अच्छी नागरिकता तथा राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जा सकता है।
4. जनसंख्या शिक्षा परिवार नियोजन से सम्बन्धित कार्यक्रम नहीं है। यह कोई प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम भी नहीं है, वरन् विद्यालयीय पाठ्यक्रम का अंग है जिसके विषद् अध्ययन से छात्रों में समस्या के प्रति उपयुक्त समझ विकसित होती है एवं छात्र कल्याण में इस समस्या के निदान के लिए मौलिक उपाय ढूँढ़ सकते हैं।
5. जनसंख्या शिक्षा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की प्रेरणा देती है। इसके द्वारा बाल-विवाह, दहेज प्रथा, अशिक्षा, भाग्यवाद, अधिक सन्तान ईश्वर का वरदान की भावना आदि बुराईयों को दूर करने की प्रेरणा मिलती है।
6. जनसंख्या शिक्षा शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करती है। इनमें माता-पिता के प्रति उत्तदायित्यो की भावना पनपती है।
7. जनसंख्या शिक्षा भावी नागरिकों को स्तरीय जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है जो विकसित राष्ट्र का मूल मंत्र है।
8. समस्त समस्याओं का उदगम जनसंख्या वृद्धि है, अतः भावी नागरिकों की वस्तुस्थिति के बारे में ज्ञान देकर, अवबोध पैदा कर जनसंख्या को कम करने की प्रवृति का विकास करना वांछित है, जनसंख्या शिक्षा का प्रचार-प्रसार देश को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाने के लिए महत्वपूर्ण कदम है।

जनसंख्या शिक्षा शिक्षण हेतु रचनात्मक सुझाव

भारत में जनसंख्या नियंत्रण के सभी कृत्रिम निरोधक उपाय असफल सिद्ध हो रहे हैं, अतः एकमात्र उपाय है जनसंख्या शिक्षा। जब भावी नागरिक इस शिक्षा के महत्व से परिचित होंगे तो वे स्वयं उठ खड़े होंगे। डॉ० कोठारी के शब्दों में- भारत के भाग्य का निर्माण कक्षाओं में हो रहा है। शिक्षक बालकों के मानसिक बोध को देश की जनसंख्या के नीति-निर्धारिण में, उसके पालन में सक्रिय योगदान देने के योग्य बनायें। ऐसी स्थिति में अध्यापक की भूमिका इस प्रकार है-

1. अनुसन्धान एक शोधकार्य
2. स्वाध्याय
3. सहायक समाग्री निर्माण
4. विभिन्न शैक्षिक एवं उपयोगी कार्यक्रमों का आयोजन जैसे- निबन्ध लेखन, वाद-विवाद, कविता पाठ, प्रदर्शनी, चित्र प्रदर्शन, समाचार पत्र वाचन को जनसंख्या शिक्षा से जोड़कर जनशिक्षण के उपयोग में लाएँ। जनसंख्या शिक्षा प्रदान करने हेतु विद्यालय, समाज एवं अभिभावकों में अनुकूल वातावरण का निर्माण हो। इस शिक्षा को वयस्क, अनौपचारिक एवं सतत शिक्षा कार्यक्रमों के साथ जोड़ा जाए। बालक, बालिकाओं एवं अभिभावकों को प्रेरित किया जाए। विभिन्न स्थानों पर मेले, उत्सव आयोजित कर प्रदर्शनी का आयोजन प्रेरक सिद्ध होगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम पाते हैं कि जनसंख्या शिक्षा एवं यौन-शिक्षा में मौलिक भेद है। जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जिसके अन्तर्गत जनसंख्या की गत्यामकता के प्रति सजग करना, राष्ट्रीय विकास की धारा में सहभागिता जाग्रत करने का प्रयास है। यह सामाजिक एवं जैविक घटना के रूप में विचारों की क्रांति है। इसका उद्देश्य न केवल जनसंख्या घटाना, वरन् गुणात्मक दृष्टि से जनसंख्या को बेहतर बनाना है, जनसंख्या वृद्धि से पर्यावरण एवं पारिस्थितिकीय असन्तुलन के बारे में चेतना पैदाकर जनसंख्या नियंत्रण हेतु युवाओं को उत्प्रेरित करना है जो देश के भावी कर्णधार हैं। अतः जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या नियोजन एवं राष्ट्र की सर्वतोमुखी प्रगति के लिए प्रभावी विकल्प सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *व्यास, हरिश्चन्द्र (2007) : शैक्षिक प्रबंध एवं शिक्षा की समस्याएँ, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली, पृ०161-165*
2. *दूबे, पुष्पा (1984) : जनसंख्या शिक्षा, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली*
3. *सहारण, सुरेन्द्र कुमार (2008) : सामाजिक विज्ञान शिक्षण, साहित्य चन्द्रिका प्रकाशन, राजापार्क, जयपुर, पृ० 116-122*
4. *सिंह, हरिहर एवं यादव, समरजीत (2008) : जनसंख्या शिक्षा के मूल तत्व , जिन्दल बुक स्टोर्स, महेश्वरी कुंज, हापुड़*
5. *त्रिपाठी, आर०एस० (1991) : जनांकिकी और जनसंख्या अध्ययन, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर*
6. *तिवारी राम कुमार (2015) : जनसँख्या भूगोल प्रविलिका पब्लिकेशन इलाहाबाद*